जोबला के लोगो का आंगनवाड़ी केन्द्र से मिलने वाली सूविधाओं पर समझ बनी

फोटो–1 : ब्रहम्पुर गाँव

गुमला जिले के चैनपुर प्रखण्ड में ब्रहम्पुर गाँव अवस्थित है जिसकी जनसंख्या लगभग 417 है। इसके चार टोले है । जो काफी दूर–दूर पर अविस्थित है।

फोटो–2 : पहाडी और जंगली रास्ते

फोटो–3 : पहाडी और जंगली रास्ते

इसी गाँव से घने पहाड़ी जंगल के रास्ते 3 किमी0 पैदल चलने के बाद पहाड़ के उपर जोबला टोले में पहुंचा जा सकता है जो कि ब्रहम्पुर गाँव का एक टोला है। इस टोले में मुख्य रूप से कोरवा जनजाति के लोग निवास करते है जिसकी जनसंख्या लगभग 77 है। इस टोले तक आने जाने के लिए सुरक्षित रास्ता नहीं होने के कारण सहिया भी यहां तक अकेले नहीं आ पाती है।

फोटो–4 : जोबला टोले के घर

फोटो–5 : लकडी लेकर बाजार जाती महिलाएं

फोटो–6 : लकड़ी लेकर बाजार जाते पुरूष

यहां के लोग अपना जिवन यापन करने के लिए जंगल से लकड़ी काट कर नजदीक के बाजार में काफी कम दामों में बेचते है । लकड़ी का गट्ठा को लगभग 8 से 10 कि0मी0 दूर बाजार तक ले जाते है । कभी–कभी इन्हे निचे के गांव से ऑटो मिल जाता है तब कुछ आसानी होती है । एक गट्ठर को मात्र 120 रू0 में बेच पाते है।

फोटो–7 : जंगल से लकड़ी लेकर आते बुजूर्ग

फोटो–8 : हथौड़ा लेकर जाती बच्ची

मजबूरी में यहां के बुढ़े एवं बच्चों को भी काम करना पड़ता है।

फोटो–9 : दूध बनाती बच्ची

जब घर के महिलाएं किसी खेत–बाड़ी या जंगल से लकरी लाने के लिए बाहर जाती है तो घर की बड़ी लड़की को घर के सारे काम करने पड़ते है।

तथा अपने छोटे भाई बहनों का भी ध्यान रखना पड़ता है।

फोटो–10 : बच्चे को दूध पिलाती बच्ची

फोटो–11 : सामूदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चैनपुर

सामूदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चैनपुर की दूरी होने के कारण यहां लोग बहुत ज्यादा स्वास्थ्य लाभ लेने नहीं जा पाते है।

आंगनवाड़ी केन्द्र भी पहाड़ से निचे दूसरे टोले बकराकोना में है जो कि काफी दूरी पर है। जिस दिन आंगनवाड़ी केन्द्र के द्वारा राशन का वितरण किया जाता था तब ही महिलाएं आती थी तब उसी दिन उनका टिकाकरण भी होता था। किन्तु सभी लोग नहीं पहुंच पाते थे कुछ के परिवार के सदस्य आते थे जिस कारण उनको राशन तो मिल जाता था परन्तु टिकाकरण नहीं हो पाता था।

सहिया के द्वारा पी0 एल0 ए0 बैठक शुरू किया गया जिस बैठक में कदम के खेल के माध्यम से बताया गया कि आंगनवाड़ी से दूर पहाड़ के उपर रहने वाले ही सभी प्रकार की स्वस्थ्य एवं सरकारी सूविधा से वंचित रह जाते है जो हम सभी के लिए बहुत जरूरी है ताकि हमारा परिवार भी स्वस्थ्य एवं सुरक्षित रहे।

फोटो–12 : पी0 एल0 ए0 बैठक कराती सहिया

बैठक के बाद वहां पर उस बैठक में उपस्थित तीन गर्भवती महिला ने सहिया से बात कि और आंगनवाड़ी जाने की ईच्छा जताई।

फोटो–13 : गर्भवती महिला

और तीनों गर्भवती महिला ने सहिया के साथ नीचे आकर आंगनवाड़ी में अपना पंजीकरण कराया तथा समय–समय पर आकर अपना जांच भी कराती रही। तथा उन महिलाओं का प्रसव भी अस्पताल में हुआ।

अब यहां सहिया और ए0एन0एम0 के द्वारा खबर दिये जाने पर कि आंगनवाड़ी केन्द्र में टिकाकारण रखा गया है तो महिलाएं पहाड़ से निचे उतर कर

फोटो–14 : धात्री महिला

फोटो–15 : आंगनवाड़ी केन्द्र बकराकोना

फोटो–16 : आंगनवाड़ी केन्द्र बकराकोना

अपना एवं अपने बच्चों को टिकाकरण कराती है । अब आंगनवाड़ी से राशन तो प्राप्त करती ही है साथ में नियमित रूप से टिकाकरण कार्यक्रम में भी शामिल होतीं है।

जोबला टोले के लोग जागरूक तो हो रहे है वे चाहते है कि वे भी सारी सुविधाओं का लाभ ले। और जिनके पास संसाधन है वे लोग सूविधा ले भी पा रहे है। परन्तु जिन महिलाओं का गर्भ 7 माह या उससे अधिक हो गया है या जिनका छोटा बच्चा है उन्हें पहाड़ से निचे आने जाने काफी परेशानी होती है। जिस कारण यहां के लोग कुछ सूविधाओं से वंचित रह जाते है। जब बरसात का मौसम शुरू होता है तब वैसे में तो ये लोग पहाड़ से निचे नहीं उतर पाते है क्योंकि बरसात के मौसम में पहाड़ से निचे आना और उपर जाना बहुत कठिक हो जाता है पुरा रास्ता फिसलन वाला हो जाता है। यहां की महिलाएं वतलाती है कि यहां पर प्रसव ज्यादातर तो घर पर ही होता है क्योंकि प्रसव के आखिरी महिने में पहाड़ से उतर पाना संभंव नहीं है। और यहां से निचे जाने का दूसरा कोई संसाधन भी नहीं है क्योंकि यहां तक ममता वाहन नहीं पहुच सकता। प्रसव कराने के लिए दाई भी निचे बकराकोना या टोंगों गांव से ही आती है जिसे भी काफी दिक्कत होती है ।

इस स्थिति में अगर जोवला गाँव की दाई को सुरक्षित प्रसव का प्रशिक्षण दिया जाये तो कुछ हद तक सुविधा को पहुंचाया जा सकता है।